

(चौपाई मिश्रित गीता)

सम्यक् दर्शन-रतन गहीजे, जिन-वच में सन्देह न कीजै ।
इह- भव-विभव-चाह दुःखदानी, पर- भव भोग चहै मत प्राणी ॥
प्राणी गिलान न करि अशुचि लिखि, धरम गुरु प्रभु परखिये ।
पर-दोष ढकिये धरम डिगते को, सुथिर कर हरखिये ॥
चहुँ संघ को वात्सल्य कीजै, धरम की परभावना ।
गुन आठसों गुन आठ लहिकैं, इहाँ फेर न आवना ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टांगसहितपंचविंशतिदोषरहितसम्यग्दर्शनाय जयमालापूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा ।

सम्यग्ज्ञान पूजन

(दोहा)

पंच भेद जाके प्रकट, ज्ञेय-प्रकाशन भान ।
मोह-तपन-हर-चन्द्रमा, सोई सम्यग्ज्ञान ॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र अवतर अवतर, संवौषट्, इति आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठःठः, इति स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञान ! अत्र मम सन्निहितो, भव-भव वषट्, इति सन्निधिकरणम् ।
(सोरठा)

नीर सुगन्ध अपार, तृषा हरै मल छय करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौ सदा ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।
जल केसर घनसार, ताप हरै शीतल करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौ सदा ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।
अछत अनूप निहार, दारिद नाशै सुख भरै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौ सदा ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
पहुप सुवास उदार, खेद हरै मन शुचि करै ।
सम्यग्ज्ञान विचार, आठ भेद पूजौ सदा ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।